कलह रहित जीवन जीना

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons | **पुस्तकें:** apcwo.org/books | **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org | **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org | **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Living Life Without Strife)

कलह रहित जीवन जीना

विषयसूची

1. कलह क्या है? 1
2. कलह के क्या कारण हैं? 2
3. कलह के नकारात्मक परिणाम 14
4. अपने जीवन से कलह को दूर रखना 16

1
कलह क्या है ?

कलह सभी जगह होते हैं—परिवार में, कार्यस्थल में, सेवकाई में, कलीसिया में, इत्यादि. और यह मानवीय संबंधों को नष्ट कर देते है। जीवन का शायद ही ऐसा कोई पहलू बचा हो जो इस कैंसर से अछूता हो। अतः यह कलह है क्या? यह लोगों के बीच विभाजन, झगड़ा, घृणा, दुर्भावना, विवाद, शत्रुता, या गुटबाजी है।

हम घर में पति-पत्नी या माता-पिता के बीच और बच्चों में भाई-बहनों के बीच झगड़ों को पाते हैं—बच्चों के रूप में हम खिलौनों के लिए लड़े होंगे, वयस्कों के रूप में हम जमीन या धन के लिए लड़े होंगे! हमारे कार्यस्थल में, टीम के सदस्यों के बीच, तथा मालिक और कर्मचारी के बीच भी कलह को पाते हैं। दुर्भाग्यवश, हमारी कलीसियाओं में या कभी-कभी एक ही मंडली के सदस्यों के बीच भी कलह होते हैं। लोग रविवार को "हाल्लेलुयाह" गाते होंगे, किन्तु उसी मंडली के अन्य सदस्यों के साथ मिलजुलकर नहीं रह पाते। यह कहना बड़े दु:ख की बात है, लेकिन कभी-कभी झगड़े परमेश्वर की सेवकाइयों के बीच भी होते रहते हैं।

इस पुस्तक का उद्देश्य है

- कलह के कारणों को समझना,
- हमारे जीवन में कलह के नकारात्मक परिणामों का अध्ययन करना, और
- यह सीखना की अपने जीवन से कलह को कैसे दूर रखा जाए।

2
कलह के क्या कारण हैं?

नफरत

नीतिवचन 10:12
बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढंक जाते हैं।

घृणा, कलह का कारण बनती है। उदाहरण के लिए, अपनी नौकरी के पहले दिन, जब आपको अपनी नई टीम से परिचय कराया जाता है, तब आप खुश होते हैं। किन्तु बाद में आपको एहसास होता है कि टीम में एक ऐसा व्यक्ति है जिसके साथ कोई भी "मैत्रीपूर्ण संबंध" नहीं रखता—बस आप उस व्यक्ति के साथ मिलकर काम नहीं कर पाते। शुरुवात में, आपने उसके साथ सभ्य होने की कोशिश की, लेकिन धीरे-धीरे आप उस व्यक्ति को नापसंद करने लगे। बाद में आप उससे परहेज करने लगे और फिर उससे घृणा भी करने लगे। यह घृणा एक दिन फूट सकती है, किन्तु उस व्यक्ति को अंतिम क्षण तक पता भी नहीं चल पाता कि आप उसे पसंद नहीं करते। इस प्रकार, उस व्यक्ति के लिए आपकी घृणा ने आपके और उसके बीच कलह पैदा कर दिये।

क्रोध या उग्र स्वभाव

नीतिवचन 15:18
क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करने वाला है, वह मुक़दमों को दबा देता है।

हम सभी में क्रोधित होने की क्षमता होती है। हमारे अंदर जो

भावनाएं प्रवाहित होती हैं—जिसमें क्रोध भी शामिल है, उसे सही तरीके से व्यक्त किया जाना चाहिए। हमें सही बातों पर क्रोधित होना चाहिए —पाप, अन्याय और असहिष्णुता। किन्तु हम में से कुछ लोगों में उग्रता होती है और यहां तक कि यदि कोई छोटी सी बात कह या कर देता है, तो हम उग्र हो जाते हैं। हमारा अनियंत्रित क्रोध हममें कल्पना से भी अधिक कलह पैदा कर देता है। क्रोध प्रायः कलह को जन्म देता है और यह रिश्तों में दरार उत्पन्न कर देता है।

नीतिवचन 29:22
क्रोध करने वाला मनुष्य झगड़ा मचाता है, और अत्यन्त क्रोध करने वाला अपराधी भी होता है।

नीतिवचन 30:33
क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन, और नाक के मरोड़ने से लहू निकलता है, वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है।

नीतिवचन 30:33 को शाब्दिक इब्रानी में इस तरह से लिखा है, *"क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन और नाक के मरोड़ने से लहू निकलता है, वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है। बकवास करना, पीठ पीछे निंदा करना और चुगली करना।"*

बकवास करना, पीठ पीछे निंदा करना और चुगली करना

नीतिवचन 26:20
जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जहाँ कानाफूसी करनेवाला नहीं, वहाँ झगड़ा मिट जाता है।

चुगलखोर, गपशप करने वाले, कानाफूसी करने वाले या निंदा करने वाले झगड़े का कारण बनते हैं। उदाहरण के लिए, दो अच्छे दोस्तों के मामले पर विचार कीजिये। मान लीजिये कि जब एक दोस्त छुट्टी पर होता है, तो कोई दूसरा व्यक्ति उसके अच्छे दोस्त से उसकी

निंदा करता है। जब दोस्त लौटता है, तो वह पाता है कि उसका दोस्त पूरी तरह से अलग व्यवहार कर रहा है। ऐसा हुआ क्योंकि वहा गपशप फैलाने वाला वह व्यक्ति था। इसी तरह, जब हम बिना किसी कारण लोगों के की बुराई करते हैं, तो हम कलह के बीज बोते हैं जो लोगों के बीच संबंधों को नष्ट कर देता है। इसलिए, जब हम दूसरों के बारे में बातें करते है, तब हमें सावधान रहना चाहिये।

नीतिवचन 16:28
टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करने वाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

झगड़ालू या विवादी होना

नीतिवचन 26:21
जैसे अंगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है,
वैसे ही झगड़ा बढ़ाने के लिये झगड़ालू होता है।

एक झगड़ालू व्यक्ति से हम जो कुछ भी कहते हैं या करते हैं वह उसे क्रोधित कर देता है। उसके व्यक्तित्व का हिस्सा कुछ ऐसा होता है जो उसे विवादी बनाता है और कलह को जन्म देता है जो सबके साथ उसके साथ संबंधों को तोड़ देता है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि अन्य लोग गलत हैं, बल्कि इसलिए कि उसमें कुछ गलत है जो उसे झगड़ालू बना देता है।

घमंड या अभिमान

नीतिवचन 28:25
घमंडी मनुष्य झगड़ा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

आइए हम एक सम्मेलन कक्ष में एक टीम के उदाहरण पर विचार

करें जो इस बात पर चर्चा कर रहे हैं कि किसी परियोजना को कैसे पूरा करना चाहिए। मान लीजिए कि आप उस टीम का हिस्सा हैं और आपको इस बात का अभिमान है कि आपकी टीम के लीडर ने आपके जैसे शीर्ष विश्वविद्यालय से स्नातक नहीं किया है, और आप इस बात से नाराज हैं कि वह आपको सम्मान देने के बजाय, आपको काम करने के लिए निर्देश दे रहे हैं। आपका अभिमान आपको उसके अधिकार की अधीनता में होने के लिए तैयार नहीं करता, क्योंकि आपको लगता है कि आप उससे बेहतर काम कर पाएंगे। यह कलह का कारण बनता है। हम दूसरों के साथ अपने संबंधों में कलह का कारण बन जाते हैं, अगर हम किसी और के बेहतर विचारों को स्वीकार न करने में बहुत घमंडी हैं या किसी और के काम करने की रीति को स्वीकार करने से इंकार करते हैं, केवल इसलिए कि वह हमारी रीतियों से भिन्न है।

स्वार्थी महत्वाकांक्षा

लूका 22:20-27

20 वैसे ही उस ने भी भोजन के बाद कटोरा लेकर कहा, *यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है, नई वाचा है।*
21 परन्तु देखो, मेरे पकड़वाने वाले का हाथ *मेरे साथ मेज पर* है।
22 और मनुष्य का पुत्र वैसा ही जाता है जैसा कि ठहराया गया है, परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा उस ने पकड़वाया है।
23 तब वे आपस में पूछने लगे कि हम में से कौन ऐसा करेगा?
24 उनमें यह वाद–विवाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाता है।
25 उसने उनसे कहा, "अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं।
26 परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन् जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने।
27 क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।

संभवतः अपने शिष्यों के साथ यीशु के अंतिम भोजन में, अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने की तैयारी के रूप में, उसने जानबूझकर प्रभु भोज की स्थापना की। उसने अपने शिष्यों को यह समझाने की कोशिश की, कि वह क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले हैं और उन्हें छोड़ कर जाने वाले हैं। किन्तु ध्यान दीजिए कि जब प्रेरितों ने यीशु के जाने के बारे में सुना तो उन्हें किस बात की चिंता हुई। चेलों के बीच विवाद पैदा हो गया कि यीशु के बाद अगला "अगुवा" कौन होगा! ये वही प्रेरित थे जो यीशु के साथ थे और उन्होंने उसे प्रचार करते हुए, सिखाते हुए, और चमत्कार करते हुए देखा था। इस विवाद से उनमें कलह पैदा हो गया।

ध्यान दीजिये कि यीशु ने उन्हें किस प्रकार उत्तर दिया कि बड़ा कौन है। उन्होंने शिष्यों को समझाया कि वे सब गलत समझते हैं। उन्होंने उनसे कहा कि शायद वे संसार को देख रहे हैं और उसी का अनुसरण कर रहे हैं जो उन्होंने अपने आस-पास देखा है। यीशु ने उनसे कहा कि शीर्ष पर बैठा व्यक्ति संसार की दृष्टि में स्वामी हो सकता है, परन्तु उनका आदर्श एक सेवक होना चाहिए जो परमेश्वर की दृष्टि में अगुवा हो। उन्होंने उनसे कहा कि वे आपस में पता लगाएं कि उनके बीच सबसे छोटा कौन बनेगा, क्योंकि वही व्यक्ति उनका अगुवा होगा। इस प्रकार, स्वार्थी महत्वाकांक्षाए कलह को उत्पन्न कर सकती हैं।

गलतफहमी या भ्रांति

प्रेरितों के काम 6:1
उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलने वाले, इब्रानी भाषा बोलने वालों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।

यरूशलेम में कलीसिया के भीतर भी कलह होते थे। इसका कारण यह था कि यूनानी भाषी यहूदियों (यूनानी धर्मियों) ने इब्रानी-

भाषी यहूदियों के बारे में शिकायत की, क्योंकि प्रतिदिन भोजन के वितरण में उनकी विधवाओं की उपेक्षा की जा रही थी। उन्होंने इस मुद्दे को प्रेरितों के ध्यान में लाया और उनसे अपनी समस्या का समाधान करने के लिए कहा। कलह का कारण यह गलतफहमी थी, कि उन पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा था जितना कि दूसरे संप्रदाय को दिया जा रहा था।

व्यक्तित्व में भिन्नताएं

प्रेरितों के काम 15:36-41

36 कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें कि वे कैसे हैं।"
37 तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया।
38 परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया था, उसे साथ ले जाना अच्छा न समझा।
39 अत: ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज पर साइप्रस चला गया।
40 परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों को परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपकर वहाँ से चला गया;
41 और वह कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ सीरिया और किलीकिया से होते हुए निकला। पौलुस ने बरनबास से कहा, "आओ, हम फिर जाकर हर एक नगर में जहाँ हम प्रभु का वचन सुनाते हैं, अपने भाइयों से भेंट करें और देखें कि वे कैसा करते हैं।

2 तीमुथियुस 4: 11
केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है।

व्यक्तित्व में भिन्नताओं के कारण भी कलह उत्पन्न हो सकते हैं, क्योंकि हम में से प्रत्येक का व्यक्तित्व और उनकी कार्य करने की शैली मे भिन्न होती है। हम प्रेरितों, बरनबास और पौलुस के

बीच में कलह को देखते हैं (प्रेरितों के काम 15:36-41)। अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर, वे यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, उसे अपने साथ ले गए, जो बरनबास का भतीजा था। यूहन्ना जो मरकुस कहलाता है एक संपन्न घर से था। (प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है कि उसकी माँ के पास एक बड़ा घर था जहाँ लोग प्रार्थना के लिए मिलते थे। (प्रेरितों के काम 12:12))। वह अपने घर की सुख-सुविधाओं का अभ्यस्त रहा होगा, किन्तु उसे बरनबास और पौलुस के साथ जहाजों में यात्रा करनी पड़ी और शायद गधों की पीठ पर भी। थोड़ी दिन बाद, शायद यूहन्ना-मरकुस को लगा कि वह कड़ी मेहनत पर खरा नहीं उतरा इसलिए वह घर वापस चला गया। पौलुस उस घटना को कभी नहीं भूल पाए। इसलिए, जब पौलुस और बरनबास अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो रहे थे और बरनबास यूहन्ना-मरकुस को अपने साथ ले जाना चाहता था, तो पौलुस ने इसकी अनुमति देने से इंकार कर दिया क्योंकि उन्हें याद था कि उनकी पहली यात्रा में क्या हुआ था।

बरनबास एक सहानुभूतिशील और दयालु व्यक्ति थे जो लोगों को दूसरा मौका देने में विश्वास रखते थे। किन्तु पौलुस ऐसा करने के लिए तैयार नहीं थे। इस प्रकार व्यक्तित्व में भिन्नताओं के कारण झगड़े हुए। लेकिन पौलुस ने अपने बुढ़ापे के वर्षों में, शायद उसके थोड़े दिन बाद वह एक तरह से नरम हो गया था, और उन्होंने तीमुथियुस से कहा, *"केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है,"* (2 तीमुथियुस 4:11)। यूहन्ना और मरकुस भी तब तक आध्यात्मिक रूप से परिपक्व हो गए थे।

दल और मतभेद

1 कुरिन्थियों 3:3-5

3 क्योंकि तुम अब तक शारीरिक हो। इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा

है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?
4 क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ," और दूसरा, "मैं अपुल्लोस का हूँ," तो क्या तुम मनुष्य नहीं?
5 अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।

कुरिन्थियों की कलीसिया में दल बने हुए थे। एक समूह ने दावा किया कि वे "पौलुस-प्रकार" के मसीही हैं और दूसरों ने कहा कि वे "अपुल्लोस-प्रकार" के मसीही हैं। इस प्रकार उसी कलीसिया के भीतर, एक समूह ने पौलुस का और दूसरे ने अपुल्लोस का समर्थन किया। परमेश्वर ने कलीसिया को बढ़ाने के लिए पौलुस का उपयोग किया था। किन्तु कुछ समय के बाद, कलिसिया में मतभेद होने के कारण दल बन गए और परिणामस्वरूप, कलह और विभाजन हुआ।

पौलुस ने उन्हें डांटा क्योंकि वे अब भी सांसारिक थे और सामान्य लोगों जैसा व्यवहार कर रहे थे। उसने उनसे कहा कि कुछ लोगों के लिए यह कहना सही नहीं है कि वे पौलुस के हैं जबकि अन्य लोगों ने कहा था कि वे अपुल्लोस के हैं। उसने उन्हें बताया कि पौलुस और अपुल्लोस परमेश्वर के सिर्फ सेवक हैं जिनके द्वारा वे यीशु पर विश्वास करते थे। न तो पौलुस और न ही अपुल्लोस, बल्कि **परमेश्वर** ही **स्वामी** हैं।

हमें भी, विश्वासियों की एक देह के रूप में, एक मन का होने की आवश्यकता है—कलीसिया हमारे या एक व्यक्ति या किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में नहीं है, बल्कि केवल **यीशु** के बारे में है। हमें कभी उस स्थान तक नहीं पहुँचना चाहिए जहाँ हम यह कहें कि, "हम अमुक पास्टर के हैं," या "हम इस अगुवे के हैं," या "हम उस सेवक के हैं," क्योंकि यदि ऐसा हुआ, तो यह इस कलीसिया में कलह को अवसर प्रदान करेगा। जब हम संसार में अन्य कलीसियाओं और सेवकाइयों को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि कुछ कलीसियाओं के नष्ट होने का

प्रमुख कारण यह है कि लोग कुछ सेवकाइयों का समर्थन करना शुरू कर देते हैं और कुछ दूसरी कलीसिया को नीचा दिखाते हैं। पौलुस 1 कुरिन्थियों 3:21 में लिखते हैं, *"इसलिये मनुष्यों पर कोई घमंड न करे।"* अगर हम सब अपनी आँखें यीशु मसीह पर केंद्रित करते हैं, न कि परमेश्वर के किसी दास पर या कलीसिया के किसी अगुवे पर, तो हम मजबूत होंगे और एक देह के रूप में स्थिर और एकजुट रहेंगे। बिल्कुल, हमें चर्च में रखे गए अगुवों के अधिकार का सम्मान करना चाहिए, किन्तु हमें यह भी समझना कि ये अगुवे सिर्फ सेवक हैं और उनके द्वारा **परमेश्वर** हमारी सेवा कर रहे हैं। यदि कोई आपसे पूछे कि, 'आप अपने स्थानीय कलीसिया में किसका समर्थन करते हैं या किसे पसंद करते हैं?' तब **"पासवान"** न कहकर **"यीशु"** कहो।

यीशु पर अपनी दृष्टि रख कर, हम अतिरिक्त मील तय कर लेंगे और वह दूरी तय करेंगे जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है—उसकी देह —और कुछ भी हमें अलग नहीं कर सकता। मुझे यह चकित करता है जब पासवान बिना किसी विभाजन के कलीसिया को एक साथ रखने में सक्षम होते हैं। कई बार, हमने पासवानों या सेवकों को यह कहते सुना है कि उनकी कलीसियाओं में दो या तीन विभाजन हुए हैं। मुझे अब तक केवल एक ही पासवान मिला है जिसने मुझे बताया है कि उनके चर्च में कोई विभाजन नहीं हुआ है। मैं ऑल पीपल्स चर्च को इसी तरह देखना चाहूँगा—जितना बड़ा होने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है बढ़ें , जहाँ परमेश्वर के कई अगुए और सेवक एकता में सेवा करें परंतु **यीशु** पर ध्यान केंद्रित करते हुए ना की किसी पासवान या अगुए या किसी विश्वासी पर।

गलातियों 5:19-21

19 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन,
20 मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,
21 डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और–और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे

ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

रोमियों 8:8
और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

तर्कपूर्ण या विवादपूर्ण उद्देश्यों पर बहस करना

1 तीमुथियुस 6:3-5
3 यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार हैं,
4 तो वह अभिमानी हो गया, और कुछ नहीं जानता; वरन् उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिससे डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे–बुरे सन्देह,
5 और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े–झगड़े उत्पन्न होते हैं जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है, और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है।

परमेश्वर के वचन में जो शब्द और विचार नहीं हैं उन पर विवाद और बहस करना कलह का एक और कारण है। कभी-कभी लोग कलीसिया में मूर्खतापूर्ण चीजों के बारे में बहस करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग तर्क करते हैं कि लोगों को बपतिस्मा देने के लिए पानी में डुबोते समय "सही रीति" कौन सी है—आगे की ओर डुबोना या पीछे की ओर डुबोना। वे बाइबल के इतिहासकारों का हवाला देते हुए कहते हैं कि उन्होंने एक विशेष तरीके से बपतिस्मा लिया है। मैं कहूँगा कि जब कोई व्यक्ति पानी में नीचे जाता है और जीवित बाहर आता है, तब वह बपतिस्मा लेता है! आइए हम लोगों की राय पर लड़ने के बजाय परमेश्वर के उस वचन पर ध्यान केंद्रित करें और सहमत हों जिसके पर न ही विवाद नहीं किया जा सकता और ना ही लोगों की राय को छोड़ा जा सकता है। तर्कपूर्ण विचारों से स्वयं को दूर रखिये। और यदि परमेश्वर के वचन में कुछ सिद्धांत स्पष्ट नहीं हैं, तो आइए हम

केवल वही जीवन व्यतीत करें जो हम वचन द्वारा समझते हैं।

मूर्खतापूर्ण प्रश्न

2 तीमुथियुस 2:23-25
23 पर मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रह, क्योंकि तू जानता है कि इनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं।
24 प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो।
25 वह विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहचानें,

मूर्खतापूर्ण और अज्ञानतापूर्ण प्रश्नों को टालें क्योंकि ये केवल झगड़े पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए, आप अपने कॉलेज के मित्र, जॉन को गवाही देने का फैसला करते हैं, जो एक ईसाई पृष्ठभूमि से है, लेकिन अभी तक विश्वासी नहीं है, और आप उससे धीरे से पूछते हैं कि वह कलीसिया में क्यों नहीं जाता। वह पलट कर तुरंत जवाब देता है और आपसे पूछता है कि क्या आप उन "नए जन्में" लोगों में से एक हैं। मान लीजिए वह आपसे यह पूछता है कि क्या आप उसे बता सकतें हैं कि कैन और हाबिल को अपनी पत्नियां कहाँ से मिलीं, तब वह सब सुनेगा जो आप उसे बताना चाहेंगे। यह प्रश्न आपको स्तब्ध कर देगा और आप इसका उत्तर देने के लिए परमेश्वर से ज्ञान माँगने लगेंगे। फिर आप अपने दोस्त को यह बताने का फैसला करेंगे कि शायद कैन और हाबिल ने अपनी बहनों से विवाह किया था, और वह इसका मजाक उड़ाएगा। आप परेशान होकर उसे छोड़ कर चले जाएंगे।

अतः, बुद्धिमानी इसी में होगी कि हम ऐसे प्रश्नों को टालें जिनके द्वारा कलह बढ़ता है। पौलुस हमें चेतावनी देते हैं कि परमेश्वर के सेवकों को कलह से दूर रहना चाहिए। आपको बाइबल से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर जानने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने से जॉन आपसे एक और प्रश्न पूछेगा, जो उग्र बहस

का रूप ले सकती है और शायद उसके साथ आपकी मित्रता भी टूट सकती है। इसके बजाय, जॉन को यह बताना बुद्धिमानी होगी कि आप उसे कुछ ऐसा बता सकते हैं जो उसके लिए अधिक उपयोगी हो और फिर आप उसे मसीह के प्रेम के बारे में बताइये।

3
कलह के नकारात्मक परिणाम

याकूब 3:16
क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।

झगड़ा भ्रम और हर बुरे काम के द्वार खोलता है

बाईबल कहती है, जहाँ ईर्ष्या, स्वार्थी अभिलाषा और स्वार्थलोलुपता होती है, वहाँ कलह होती हैं। जब हम किसी के साथ झगड़ा करते हैं, तो हम उलझन और हर बुरे कामों के लिए दरवाजा खोल देते हैं। यह शैतान के लिए दरवाजा खोलने और उसे अंदर आकर पार्टी करने के लिए कहने के बराबर है! और हम शैतान को अपने जीवन में वह सब करने के लिए स्वतंत्रता प्रदान करते हैं जो वह चाहता है—जैसे बीमारियों से हमारे शरीर को नष्ट करना, हमारे व्यवसायों और परिवारों में उलझने उत्पन्न करना, अवसाद, असफलता, आर्थिक कमी आदि। जब हम कलह या झगड़ों में पड़ते है तब, हर प्रकार के शैतानी काम होने लगते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि कोई कलीसिया कलह को बढ़ावा देती है, तो इस बात की अत्यधिक संभावना होती है कि कलीसिया शीघ्र ही विभाजित हो जाएvगी। शैतान इस कलीसिया में प्रवेश करने के लिए इस अवसर का लाभ उठाएगा और उसे नष्ट करने के लिए उस मंडली के बीच हर प्रकार की बुराई करना शुरू कर देगा। उसी तरह, यदि पति और पत्नी के बीच कलह के कारण विवाह में शैतान का प्रवेश होता है, तो वह उस घर को नष्ट कर देगा। हम सभी के बीच झगड़े होते है, जबकि कुछ लोग सोचते होंगे कि कुछ विवाहों में कोई

कलह नहीं होता। इसमें मेरी पत्नी, एमी की और मेरी भी सम्मिलित है। इसलिए, यदि हम अपने जीवन से कलह को दूर रखने के लिए अपनी पूरी कोशिश नहीं करते, तब निश्चित ही शत्रु हमारे विवाह में प्रवेश करेगा और जीवन को तोड़-मरोड़कर नष्ट कर देगा।

इसलिए, हमें सदा परमेश्वर से कलह रहित जीवन जीने में सहायता मांगनी चाहिए, चाहें कोई कुछ भी कहे या करे। यदि हम नहीं चाहते कि हमारे जीवन में कोई बुरी वस्तु आये तो हमें कलह नाम के इस कैंसर से अपनी रक्षा करनी चाहिए।

4
अपने जीवन से कलह को दूर रखना

सभी कलह का अनुभव करते हैं! हम सभी के पास ऐसे क्षण आते है जब हमारा लोगों के साथ झगड़ा हो सकता हैं, किन्तु झगड़ा एक भयंकर वस्तु है, और हमें इसे अपने जीवन से बाहर रखने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए।

नीतिवचन 17:1
चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम है जो मेलबलि-पशुओं से भरा हो, परन्तु उस में झगड़े रगड़े हों।

एक बड़े घर में जहां भोज और धूमधाम होती है जो आनंद के संकेत तो देती है, किन्तु वहाँ झगड़े होते रहते है, रहने की तुलना में थोड़े से सूखे निवाले के साथ एक छोटी सी जगह में रहना उचित हैं।

नीतिवचन 20:3
मुकदमे से हाथ उठाना, पुरूष की महिमा ठहरती है;
परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं।

कलह को टालना सम्मान की बात है, क्योंकि कोई भी मूर्ख इस कठिनाई में पड़ सकता है। झगड़ा शुरू करने के लिए अधिक बुद्धिमानी की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जब एक चरित्रवान पुरुष या गरिमापूर्ण महिला झगड़े में न पड़ने का निर्णय लेते हैं, तब यह एक सम्मान की बात होती है।

नीतिवचन 20:3 (दि मैसेज)
झगड़े को टालना अच्छा चरित्र है, लेकिन मूर्खों को झगड़े चुनना पसंद है।

झगड़े को दूर रखना अच्छे चरित्र की निशानी है।

कलह को मौका न दें

नीतिवचन 17:14 (दि मैसेज)
झगड़े की शुरुवात बांध में रिसाव की तरह होती है, इसलिए इसे फटने से पहले ही रोक दें।

उदाहरण के लिए, दोस्त के साथ कॉफी पीते समय एक बातचीत में, हम विभिन्न विषयों पर बात करते हुए इस बारे में बहस करने लगते हैं कि, सबसे अच्छा क्रिकेटर कौन है। हो सकता है कि हमने "सचिन" कहा हो और मित्र ने कुछ अन्य नाम सुझाए हों और बहस जारी रहती है। किन्तु हम यह भी देखते हैं कि बहस का "तापमान" बढ़ जाता है।,अच्छे व्यवहार और अच्छी तरह से की जाने वाली चर्चा के बजाय, यह बहस तीव्र हो जाती है। ऐसा लगता है कि यह एक गंभीर विवाद की ओर बढ़ रही है! शायद झगड़ा भी हो सकता है। ऐसे में जिस क्षण हमें लगे कि तापमान बढ़ रहा है, तो बहस को वहीं रोक देना बुद्धिमानी होगी। हमें विषय बदल कर किसी और विषय पर बात शुरु करनी चाहिए। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ऐसी स्थितियों से कब बाहर निकलना है। जब हम बांध में रिसाव देखते हैं, तो हमें बांध के फटने से पहले इसे ठीक करने की आवश्यकता होती है। हमें झगड़े को मौका नहीं देना चाहिए!

अपने काम से काम रखें

अपने काम से काम रखना सरल लग सकता है, किंतु कभी-कभी, ऐसा करना बहुत कठिन हो जाता है। हमें यह सोचने की आवश्यकता है कि हमें क्या करना चाहिए और दूसरों को यह सोचने देना चाहिए कि उन्हें क्या करने की आवश्यकता है। यह रिश्तों में कलह को टाल सकता है।

नीतिवचन 26:17
जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगड़े में विघ्न डालता है, सो वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है।

हम भारतीय शहरों की सड़कों पर, सड़क के किनारे दो लोगों को झगड़ते हुए देख सकते हैं जिसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं होता। जैसे कि , मान लीजिए कि एक दिन जब हम सड़क के किनारे से जा रहे थे तो हमने एक ऐसा ही झगड़ा होते हुए देखा। जबकि हम सड़क के किनारे लड़ रहे लोगों के लिए पूरी तरह से अजनबी थे, फिर भी यह अनुभव करते हुए कि हमें उस स्थिति के लिए "मुख्य न्यायाधीश" होना चाहिए, हम झगड़े के दोनों पक्षों को सुनने लगे। फिर अचानक, इससे पहले कि हम कुछ अनुभव कर पाते, हमने अपनी आस्तीन ऊपर चढ़ा ली और झगड़े में शामिल हो गए। अंत में, हमने सोचा कि हम लड़ाई में कैसे या क्यों सम्मिलित हुए। यह अनावश्यक परेशानी को बुलाने जैसा है। बाईबल हमें इसी बात के बारे में चेतावनी देती है, *"जो हमारा नहीं है उस झगड़े के बीच में पड़ना"* एक व्यक्ति द्वारा कुत्ते को कानों से पकड़कर ले जाने जैसा है।

"जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो, उस से अकारण मुकदमा खड़ा न करना" (नीतिवचन 3:30)—यह सामान्य समझ है और नीतिवचन की पुस्तक में भी इसका उल्लेख किया गया है—जैसा कि सड़क पर लड़ने वाले दो लोगों की स्थिति में है, जिन्होंने हमारे साथ कोई बुरा नहीं किया था, परन्तु हम उन्हें न्याय दिलाना चाहते थे! ऐसी परिस्थिति में, यदि हम उनकी सहायता करना चाहते, तो किसी पुलिसकर्मी को ढूंढना कहीं अधिक समझदारी होती। इसके अलावा, किसी और की समस्या से बाहर रहना एक अच्छी समझ होती। हमें हमेशा अपने काम से काम रखना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि हम कभी भी ऐसी परेशानी में न पड़ें जो हमारी नहीं है!

अपने उद्देश्यों पर ध्यान दें

कई बार, हमारे इरादे गलत हो सकते हैं। जब हम कलह से प्रेरित होते हैं, तो हम परेशानी में पड़ जाएंगे।

फिलिप्पियों 2:3
विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।

हमें कलह से प्रेरित होकर कुछ नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने हमें एक मेल भेजा है जो हमें परेशान करता है, तो हमें अगले दिन उस व्यक्ति को वायरस भेजने का फैसला नहीं करना चाहिए! अगर हमने ऐसा किया, तो हम अपने जीवन में सिर्फ झगड़े को एक बड़ा आधार देंगे।

याकूब 4:1,2
1 तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं?
2 तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, ओर कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं।

जब हम गलत उद्देश्य से गलत काम करते हैं, तो हमारे बीच लड़ाईयां और झगड़े होते हैं। इसलिए, हमें हमेशा अपने उद्देश्यों की ध्यान पूर्वक जाँच और उनकी रक्षा करने की आवश्यकता है। अगर हमारा उद्देश्य हमारे साथ जो हुआ उस कारण से उसे पीछे धकेलना है, तो इसके लिए हमारा उद्देश्य झगड़ा करना है और हमें ऐसा नहीं करना चाहिए।

अपने शब्दों पर ध्यान दें

हमें अपने शब्दों के प्रति सावधान रहने की आवश्यकता है।

नीतिवचन 18:6
बात बढ़ाने से मूर्ख मुकदमा खड़ा करता है, और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है।

मूर्खतापूर्ण शब्द बोलने से हम झगड़े में पड़ सकते हैं और इस कारण हम अच्छे प्रहार के योग्य हो सकते हैं। मूर्खतापूर्ण शब्द लोगों को विवाद में डाल देते हैं और इसलिए, हमें उन शब्दों को जाँचना चाहिए जो हम बोलते हैं।

नीतिवचन 22:10
ठट्ठा करने वाले को निकाल दे, तब झगड़ा मिट जाएगा, और वाद-विवाद और अपमान दोनों टूट जाएंगे।

ठट्ठा करने वाला व्यक्ति ऐसा होता है जो आलोचनात्मक शब्दों के अलावा और कुछ नहीं कहता। ऐसा लगता है कि हर कोई इस तरह के लोगों से टकराते है। उदाहरण के लिए, मान लें कि जब आपने एक नई कंपनी में काम करना शुरू किया, तो आपको इस व्यक्ति से मिलवाया गया, जिसे आपने सोचा था कि 25 वर्षों तक यहां काम करने वाला व्यक्ति "सराहनीय" होगा। उन्होंने कहा कि वह कंपनी में "बूढ़े घोड़े" हैं जो वहां आने-जाने वाली हर चीज को जानते हैं। फिर उन्होंने वहां हुई सभी नकारात्मक घटनाओं के बारे में "टीका टिप्पणी" करनी शुरू कर दी। ऐसा लग रहा था कि आपको बताने के लिए उनके पास कोई भी अच्छी बात नहीं है। फिर आपको आश्चर्य हुआ होगा कि, कंपनी में हर किसी के बारे में उनकी सारी शिकायतें सुनने के बाद वह 25 साल तक इस तरह की नौकरी में क्यों टिके हुए हैं। बाईबल कहती है कि ऐसा व्यक्ति बहुत अधिक झगड़े उत्पन्न करता है और हमें उसे बाहर निकाल देना चाहिए। तब विवाद और कलह से भी छुटकारा मिल जाएगा।

हमारे शब्द हमें प्रायः परेशानी में डाल सकते हैं। इसलिए, हमें

अपने शब्दों को जाँचने की आवश्यकता है। कभी-कभी, हल्के-फुल्के अंदाज में की गई टिप्पणियां भी झगड़े पैदा कर सकती हैं। हमने अपने दोस्तों के बालों के रंग का मजाक उड़ाया होगा, किन्तु मजाक में कहे गए उन शब्दों ने उनका अपमान किया होगा, जिससे उन्हें चोट पहुँची होगी। शायद उन्होंने अपने बालों पर उस रंग को लगवाने के लिए बहुत पैसा खर्च किये होंगे, इसलिए हमने जो कहा वह उनका अपमान कर सकता है। इससे हमारी मित्रता भी समाप्त हो सकती है। इसलिए, हमें अपने शब्दों के प्रति सावधान और बुद्धिमान रहना चाहिए, ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि हम परेशानी में न पड़ें। इन सरल बातों का ध्यान रखना यह सुनिश्चित करता है कि झगड़े का कोई कारण न हो!

अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें

नीतिवचन 15:18
क्रोधी पुरूष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करने वाला है, वह मुकदमों को दबा देता है।

एक अप्रसन्न व्यक्ति—एक क्रोधी व्यक्ति झगड़े को भड़काता है! लेकिन जो विलम्ब से क्रोध करता है, वह झगड़े को टाल देता है! जब मैं 12 साल की उम्र में बचाया गया, हालांकि मैं अपने मसीही विश्वास में बढ़ रहा था, तब "अनियंत्रित मनःस्थिति" के कारण मैं बहुत गंभीर समस्या में था! जब मैं फुटबॉल खेल रहा था—यह खेल मुझे पसंद था, एक दिन स्कूल में, लड़कों में से किसी एक ने मुझे पैर से ठोकर मारी। मुझे बहुत गुस्सा आया, मैं मुड़ा, और यह भी नहीं देखा कि वह कौन है और मैंने उसकी पीठ पर जोर से लात मारी। तब मुझे जरा भी एहसास नहीं हुआ कि वह भी एक विश्वासी है और हम एक ही प्रार्थना समूह का हिस्सा हैं! यह उसके साथ मेरी दोस्ती का अंत था। हालांकि हम दोनों विश्वासी थे, लेकिन फिर भी हमने अपना आपा खो दिया था।

मैंने अपना आपा खो दिया था और उसे इस तरह से चोट पहुंचाई थी कि शायद वह इस बारे में कभी ना भूल पाए। और बाद में मुझे इस बारे में पश्चाताप करना पड़ा। वह दोस्त परमेश्वर के साथ चलने में मेरी बहुत सहायता कर सकता था, परंतु मैंने एक दोस्त खो दिया, क्योंकि मैं अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख सका।

नीतिवचन 16:32
विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर को जीत लेने से उत्तम है।

यदि हम अपने गुस्से पर नियंत्रण रख सकें, तो हमें अर्नोल्ड श्वार्ज़नेगर से बेहतर माना जाएगा! हमारे पास उससे अधिक सामर्थ होगी, क्योंकि बाईबल कहती है यदि हम विलम्ब से क्रोध करें, तो हम सामर्थी से भी अच्छा हैं! *और जो कोई मन को अपने वश में रखता है, वह शहर को जीत लेने से भी उत्तम है!* मैं स्वयं से कहता हूँ कि अगर मैं अपने क्रोध को नियंत्रित कर सकूँ, तो मैं शक्तिशाली बनने से भी अच्छा हूँ और मैं एक ऐसे व्यक्ति से भी अच्छा हूँ जो एक शहर को जीत सकता है। मैं नीतिवचन 16:32 को अक्सर अपने आप में दोहराता हूँ, ताकि मैं शांत रह सकूँ और अपने गुस्से पर नियंत्रण रख सकूँ। इसलिए, यदि आप और मैं अपने क्रोध को नियंत्रित कर सकें, तो हम अपने जीवन से झगड़े को दूर रख सकते हैं!

नीतिवचन 25:8
झगड़ा करने में जल्दी न करना नहीं तो अन्त में जब तेरा पड़ोसी तेरा मुंह काला करे तब तू क्या कर सकेगा?

अपमान को अनदेखा करने की क्षमता विकसित करें

नीतिवचन 12:16
मूढ़ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है, परन्तु चतुर अपमान को छिपा रखता है।

मूर्ख का क्रोध एक ही बार में जान पड़ता है। अगर उसका अपमान किया जाता है, तो वह तुरंत जवाबी कार्यवाई करेगा! उसे इसके बारे में सोचने के लिए समय की आवश्यकता नहीं है। लेकिन एक विवेकपूर्ण व्यक्ति वह है जो अपमान को छिपा लेगा। वह जवाब नहीं देगा, बल्कि इसे भूल जाएगा! अपमान को अनदेखा करने की क्षमता विकसित करें। अपमान हमें तब तक नहीं बदल सकता जब तक कि हम उनके प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया न करें। ये सिर्फ लोगों की राय हैं। यदि हम जानते हैं कि हम मसीह में जो हैं, वही वास्तव में हैं, और अगर कोई हमारा अपमान करता है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

1 पतरस 2:23
वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था, और दु:ख उठा कर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था;

जब यीशु का अपमान किया गया, तो उन्होंने प्रतिशोध नहीं लिया, इसलिए हमें भी उनके आदर्श का अनुसरण करना चाहिए। हमें अपमान को नजरअंदाज करना चाहिए और उन्हें बतखों की पीठ से पानी की तरह जाने देना चाहिए। फिर हम अपने गुस्से को काबू में रख पाएँगे और उत्तेजित नहीं होंगे ।

नम्रता से प्रतिउत्तर देने की क्षमता विकसित करें

नीतिवचन 15:1
कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठंडी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।

उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति आपसे लड़ने के लिए तैयार रहता है, और आपको लगता है कि उस व्यक्ति के मुंह से धुआं निकल रहा है और उसके शब्द बहुत गर्म हो रहे हैं और आपके विरुद्ध

बरसने को तैयार हैं, तो बस शांत रहें। क्योंकि जब आप उन्हें नम्र जवाब देते हैं, तब आप स्वयं को झगड़े से दूर रखते हैं। एक नरम उत्तर वास्तव में क्रोध को दूर कर देता है! किन्तु हम में से अधिकतर लोगो की प्रतिक्रिया विपरीत होती हैं। प्रायः समझौता न होने की स्थिति में हम दूसरे व्यक्ति को बाहर कर आगे निकलने की तेजी या तीव्रता से कोशिश करते हैं—और यह पूरी स्थिति को अधिक बढ़ावा देने का कार्य करता है। इसलिये बाईबल कहती है कि एक कोमल उत्तर क्रोध को दूर कर देता है। यहां तक कि अगर दूसरा व्यक्ति क्रोधित है, तब भी हमें नम्रता से जवाब देना चाहिये।

2 तीमुथियुस 2:24
और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो।

बाईबल हमें यह निर्देश भी देती है कि परमेश्वर के सेवक होने के नाते हमें झगड़ा नहीं करना चाहिए, बल्कि हमें सभी लोगों के साथ नम्र होना चाहिए, तथा सिखाने और धैर्य रखने में सक्षम होना चाहिए। इसलिए, हमें नम्रता प्रतिउत्तर देने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। हमें हमेशा गर्म स्थितियों में हमें कोमलता और नम्रता से उत्तर देना चाहिए। कई बार यह न सिर्फ स्थितियों को सामान्य करता है, बल्कि हमारे जीवन से भी कलह दूर रखने में सहायक होता है।

झुकना

हमें समर्पण की क्षमता विकसित करनी चाहिए। कई बार, हम गलत चीजों के बारे में इतने जिद्दी होते हैं—ऐसी चीजें जो वास्तव में मायने नहीं रखती—और हमारी जिद हमारे जीवन में झगड़े का कारण बनती है! अब्राहम और लूत के उदाहरण पर विचार करें (उत्पत्ति 13:1-18)।

लूत अब्राहम का भतीजा था। उस देश की यात्रा पर जो परमेश्वर

अब्राहम को देने जा रहे थे, दोनों के पास विशाल पशु-धन और बड़ी संख्या में सेवक थे। बहुधा उनके संबंधित सेवक आपस में लड़ते झगड़ते थे! उनकी यात्रा के दौरान बहुत झगड़े हुए! अब्राहम ने महसूस किया कि क्या हो रहा है और लूत से कहा कि इस तरह से अपनी यात्रा में जाना अच्छा नहीं है और इसलिए उसने लूत से कहा कि वह ग्रामीण क्षेत्र का जो भी हिस्सा लेना चाहे उसे ले ले और फिर उसने कहा कि वह विपरीत दिशा में जाएगा। वह सचमुच लूत के आगे यह कहकर झुका कि वह उस भूमि में से जो कुछ भी चाहता है, उसे ले ले!

लूत ने चारों ओर देखा, उसने सदोम और अमोरा के अद्‌त मैदानों को देखा, और वहाँ जाने का निर्णय लिया, क्योंकि वह भूमि उपजाऊ थी। उसने अपने सभी पशुओं और लोगों को लिया और सदोम और अमोरा में चला गया। और लूत के जाने के ठीक बाद, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह उठे और उस भूमि पर चले। परमेश्वर ने कहा कि वह अब्राहम को भूमि का हर वह हिस्सा देगा जहाँ जहां उसके कदम बढ़ेंगे। उस समय से, उसके पशु-धन में बहुत वृद्धि हुई। यहाँ तक कि अब्राहम के सेवकों ने भी माना कि परमेश्वर ने उनके स्वामी को आशीषें दी हैं। जबकि लूत के लिए जो सदोम और अमोरा में गया था, सब कुछ नष्ट हो गया और उसे अपनी जान बचाने के लिए सिर्फ उन कपड़ों के साथ भागना पड़ा जो उसने पहने हुए थे! याद रखिये, यह अब्राहम था जो झुका था!

अतः, हमें भी अनदेखा करना सीखना होगा! उदाहरण के लिए, यदि किसी की परिवारिक मकान पर झगड़ा या विवाद चल रहा हो और आपको अपने वास्तविक हिस्से से कम दिया जा रहा है, तो बस झुक जाएं और जो भी दिया जा रहा है उसे स्वीकार करें। आप या तो कठोर हो सकते हैं या लड़कर अपने "दोस्त" की तरह झगड़ा कर सकते हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो कि आपको संपत्ति का वास्तविक हिस्सा मिले या आप झुक जाएं और झगड़े को दरवाजे से बाहर रहने

दें! ऐसा करने से आपके जीवन में परमेश्वर की आशीषें आएंगी!

जब हम कलह को अपना मित्र बनाते हैं, तो स्वर्ग बंद हो जाता है। कोई आशीष नहीं आती। इसके बजाय, यदि हम झगड़े को दरवाजे से बाहर रखते हैं, तो परमेश्वर वास्तव में अपनी आशीषों को उंडेलते हैं। अब्राहम के साथ यही हुआ था। जिस दिन लूत चला गया, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि बाकी सब कुछ उसका है, और परमेश्वर उसके मित्र थे और वह सभी स्थितियों में उसके साथ थे। परमेश्वर ने छोटे दिखने वाले सौदे को अब्राहम के लिए कई गुना बढ़ा दिया और इसे एक महान आशीष में बदल दिया। जब लूत ने भूमि के एक हिस्से की ओर देखा और उसके "मूल्य" को कम समझा एवं उसने उपजाऊ भूमि को चुना। उसने अब्राहम को वह करने दिया जो उसे लगा कि यह वास्तव में अधिक मूल्यवान नहीं है! परन्तु परमेश्वर अब्राहम के साथ थे। अतः, हमें कलह को दूर रखने के उद्देश्य हेतु समर्पण करना सीखने की आवश्यकता है और तब हम परमेश्वर की आशीष को देखेंगे।

नम्रता निर्बलता नहीं है

भजन संहिता 37: 11
परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएंगे।

नम्रता वास्तव में छिपी हुई शक्ति है। बाईबल कहती है कि *नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे।* रविवार के एक अखबार में एक लेख छपा था जिसमें कहा गया था कि नम्र लोग पृथ्वी के वारिस नहीं होंगे। परंतु बाईबल के अनुसार यह अब भी सत्य है कि नम्र लोग पृथ्वी के वारिस होंगे। शायद लोग इसे देखने के लिए लंबे समय तक जीवित न रहें। परमेश्वर कभी असफल नहीं होते, और उनका वचन सत्य है। नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी **होंगे**।

शीघ्रता से समझौता करें

मत्ती 5:9,25,26
9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
25 जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में हैं, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए।
26 मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा।

इब्रानियों 12:14
सब से मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।

रोमियो 12:18
जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

यीशु ने हमें निर्देश दिया कि हमें अपने विरोधियों से तुरंत मेल मिलाप कर लेना चाहिए इससे पहले कि वे हमें न्यायालय में ले जाएं और सजा सुनाने के लिए एक न्यायाधीश सौंप दें। हमें हमेशा मेल-मिलाप करके शांति बनाए रखने वाला, और अनदेखा करके समर्पण करने वाला बनना चाहिए। जब तक हमारा उद्देश्य झगड़े को दूर रखना है और यदि हम झुकने से ऐसा कर सकते हैं, तो परमेश्वर की आशीषें निश्चित रूप से हमारे जीवन में हमारा अनुसरण करेंगी! हम झुकने से क्या खो सकते हैं, परमेश्वर हमें अपने आशीषों के द्वारा कई गुना दे सकते हैं!

गलतियों का हिसाब न रखें

लोगों ने जो गलत किया है, उसका हिसाब मत रखिये। उदाहरण के लिए, जब आप किसी से लापरवाही से बात करते हैं, तो अचानक वह व्यक्ति आप पर कुछ गलत करने का आरोप लगाता है जो आपने

25 साल पहले उसके साथ किया था। आप लंबे समय से भूल गए थे, किन्तु वह नहीं भूला। वह न सिर्फ उस अपराध को याद रख सकता है, बल्कि उस अपराध के समय और आपके बारे में सब कुछ याद रख सकता है।

बाईबल कहती है कि *"प्रेम अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता"* (1 कुरिन्थियों 13:5)। प्यार बुराई का कोई हिसाब नहीं लेता है और न ही दूसरों के पापों का लेखा रखता है। इसलिए, अगर हम कलह-रहित जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें प्रतिदिन अन्य लोगों की स्लेट स्वच्छ रखना सीखना होगा! उन्होंने हमारे खिलाफ जो कुछ किया है, उसका लेखा-जोखा हमें नहीं रखना चाहिए! यह हमारे जीवन से कलह को दूर रखेगा।

नीतिवचन 17:9
जो दूसरे के अपराध को ढांप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रों में भी फूट करा देता है।

उदारतापूर्वक एवं शीघ्रता से क्षमा करें

मत्ती 5:23,24
23 इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे। 24 और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

जब हम अतीत के किसी विषय को दोहराते हैं, तो हम हमारी मित्रता को खो देते हैं एवं नष्ट कर कर देते हैं। हमें अतीत को भूलकर उसे छोड़ देना चाहिए अन्यथा हम हमारी मित्रता को नष्ट कर देंगे। यदि हम किसी अपराध को ढंक देते हैं, तो इसका अर्थ है कि, हम वास्तव में प्यार का अनुसरण कर रहे हैं। हमें शीघ्रता एवं उदारता से

क्षमा करने की आवश्यकता है। यीशु ने कहा कि यदि हम प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाते हैं एवं यह अनुभव करते हैं कि किसी ने हमारे विरुद्ध कुछ गलत किया है, तो हमें प्रार्थना शुरू करने से पहले इसे सुलझा लेना चाहिए। इसलिए, यदि हम किसी स्थिति को जल्दी से सुलझा लेते हैं, तो हम किसी भी समय प्रार्थना कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि हम तुरन्त क्षमा करने की अपेक्षा इसे लम्बे समय तक टालते रहते हैं, तो इससे पहले कि हम प्रार्थना करना शुरू करें, हमें क्षमा मांगने के लिए अधिक श्रम करना होगा। अतः जब भी अपराध होता है, तो हमें तुरंत क्षमा कर देना चाहिए—इसे भूल जाएं, इसे सुलझा लें और उस विषय स्थिति, को समाप्त कर, स्लेट को साफ कर दें! फिर, हम किसी भी समय प्रार्थना करने के लिए तैयार रहेंगे। जब पतरस ने यीशु के पास आकर उनसे पूछा कि, *"प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक"* (मत्ती 18:21,22)।

शायद यह यूहन्ना था, एक प्रिय शिष्य, जो पतरस को बहुत परेशान कर रहा था, और पतरस अब इसे संभाल नहीं पा रहा था। इसलिए, उसने यीशु के साथ इस पर चर्चा करने का फैसला किया और शायद अपराधी के नाम का उल्लेख किए बिना, उसने यीशु से पूछा कि उसे कितनी बार किसी को माफ करना चाहिए। यीशु जानते थे कि क्या हो रहा है। इसलिए, जब पतरस ने उनसे पूछा कि क्या उसे सात बार क्षमा करना होगा, तो यीशु ने उत्तर दिया, "सात बार के सत्तर गुने तक।" दूसरे शब्दों में, यीशु पतरस को उदारता से क्षमा करते रहने के लिए कह रहे थे। हमें गलतियों का लेखा-जोखा नहीं रखना चाहिए, और यदि हम ऐसा करेंगे, तो हमारे पास लोगों से झगड़ा करने का कोई कारण नहीं बचेगा। क्योंकि सब क्षमा कर

दिए गए हैं!

शैतानी कार्यों को बांधें

इफिसियों 6:12
क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

कलह और भ्रम भी शैतानी कार्यों के कारण हो सकते हैं। यद्यपि अधिकांश समय, हम अपने जीवन में कलह के लिए उत्तरदायी होते हैं, फिर भी कुछ ऐसे समय भी आते हैं, जब हमारे संबंधों में कलह और भ्रम इसलिए उत्पन्न होते हैं, क्योंकि शैतान ऐसा करने का प्रयास कर रहा है! हमने कुछ भी गलत नहीं किया, और दूसरों ने भी कुछ गलत नहीं किया है, किन्तु हम पाते हैं कि हमारे रिश्तों में कुछ गलत हो रहा है! स्थितिया उस तरह से हैं जिस तरह से इन्हें होना चाहिए! इस मामले में, यह अत्यधिक संभावना है कि शैतान इस रिश्ते को नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। इस रिश्ते को तोड़ने की कोशिश में झगड़े की भावना उत्पन्न होती है! यहीं पर हमें अपने परमेश्वर द्वारा दिये गए अधिकार के साथ खड़े होने और आत्मा की तलवार का उपयोग करने की आवश्यकता है! हमें परमेश्वर का वचन बोलना चाहिए और इस रिश्ते में शांति की घोषणा करनी चाहिए कि यह एक राजकीय संबंध है जहां धार्मिकता, शांति और आनंद है। हमें हमेशा कहना चाहिए, “हम किसी भी रिश्ते में आने वाले झगड़े या विभाजन को बर्दाश्त नहीं करेंगे!" हम अपने परमेश्वर द्वारा दिये गए अधिकार को ले सकते हैं और अपने सभी रिश्तों से झगड़े की भावना को दूर कर सकते हैं! हमें शांति बनाए रखने के लिए ऐसा करने की जरूरत है।

चुनौती

व्यक्तियों के रूप में

रोमियों 13:12-14
12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।
13 जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में।
14 वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

व्यक्तिगत रूप से, हमें अपने जीवन से कलह को दूर रखने के लिए बुलाया गया है। दिन हमारे हाथों में है! इसलिए, आइए हम अंधेरे के कामों से छुटकारा पाएं और प्रकाश के हथियार को धारण कर लें। हम इसे किस प्रकार से कर सकते करते हैं? परमेश्वर का वचन कहता है कि हमें शालीनता से चलना चाहिए। शालीनता से चलने का क्या मतलब है? हमें वैसे ही चलना चाहिए जैसे हम दिन में चलते हैं, हमें अंधकार के सभी कामों से छुटकारा पाना चाहिए, यहाँ तक कि झगड़े से भी। हम दिन के लोग हैं, रात के नहीं! हमें शालीनता से चलना चाहिये और यीशु को अपनाना चाहिये! हम सभी बिना किसी झगड़े के जीवन जीने का चुनाव कर सकते हैं। हमारे दोस्तों, पड़ोसियों और जिनके साथ हम रहते हैं, उनके साथ झगड़े के कई अवसर आएंगे! उदाहरण के लिए, हमारे अपार्टमेंट में, जब हमारे पड़ोसी संगीत को जोर से बजाने लगते हैं, तो हम भी अपने संगीत को जोर से बजा कर प्रतिक्रिया कर सकते हैं। हमें इस प्रकार उत्तर नहीं देना चाहिए जो झगड़े पैदा कर सकते हैं।

यह हम सभी के लिए एक चुनौती है! हमें स्वयं को बताते रहना होगा, “जो होता है, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अन्य लोग क्या

कहते या करते हैं, इस प्रकार कितने ही अवसर हमारे मार्ग में आ सकते हैं, हमें अपना जीवन कलह रहित जीना है!"

एक देह के रूप में

भजन संहिता 133:1-3
1 देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!
2 यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर से बह कर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया।
3 वह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है॥

हमारी कलीसियाओं में भी, कोई कलह **नहीं** होना चाहिए। जहाँ शून्य कलह है, वहाँ हम परमेश्वर के अभिषेक और ताजगी का अनुभव करेंगे। ओस होगी, इसलिए जीवन, आशीष और शांति भी। यह हम पर निर्भर है कि हमारे पास ऐसी कलीसिया हो! हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम कलह रहित लोगों एक देह हों जहां हर कोई प्रेम, शांति और सद्भाव में चलता हो। हर किसी को अपने जीवन से कलह को दूर रखने के महत्व को समझना चाहिए। यदि कोई समस्या उत्पन्न होती है, तो हमें इसे तुरंत सुलझाना चाहिए, क्षमा करना चाहिए, भूल जाना चाहिए और इसे दोहराना नहीं चाहिए! केवल अच्छी बातों को रिकॉर्ड करें—सफलताएं, जो वस्तुएं पूर्ण हो चुकी हैं। असफलताओं को और नकारात्मकताओं को भूल जाएं। लोगों की गलतियों को भूल जाएं और उन गलतियों को मिटा दें क्योंकि बाईबल कहती है कि परमेश्वर हमारे पापों को समुद्र की गहराइयों में डाल देते हैं, और उन्हें कभी याद नहीं करते! यदि परमेश्वर हमारे पापों को याद नहीं करते, तो हमें उन बातों को याद रखने का कष्ट क्यों उठाना चाहिए? हम अपनी स्मृति कोशिकाओं का उपयोग कुछ सकारात्मक बातों के लिए कर सकते हैं!

पश्चाताप और प्रार्थना

हम में से कुछ लोग ऐसी चीजों को करते हैं जो कलह से प्रेरित होती है। लेकिन हम इसे बदल सकते हैं! प्रार्थना कीजिये,

"परमेश्वर, मैं आपकी उपस्थिति में खड़ा होता हूँ, और मैं अपने हृदय को नम्र करता हूँ। मैंने यह एहसास किया है कि मैं कुछ ऐसी चीजें कर रहा हूँ जो सच में कलह से प्रेरित हैं! लेकिन मैं इसे बदलना चाहता हूँ!"

हम में से कुछ लोग अपने शब्दों में बहुत ढीले हो सकते हैं—यह महसूस न करते हुए कि हम वास्त्व में लोगों को नुकसान पहुंचा रहे हैं, और इसी कारण हम अपने बहुत से मित्रों को गंवा देते हैं। आइये हम प्रार्थना करें,

"परमेश्वर मैं अपने शब्दों में अधिक सावधान रहना चाहता हूँ।"

हम में से कुछ लोग बहुत उग्र होते हैं, और आसानी से क्रोधित हो जाते हैं और अपना नियंत्रण खो देते हैं। लेकिन परमेश्वर का वचन कहता है कि यदि हम अपने क्रोध को नियंत्रित कर लें, तो हम उस व्यक्ति से बेहतर हो सकते हैं जो शहर पर शासन करता है। परमेश्वर से कहिये,

"परमेश्वर मुझ पर अनुग्रह कीजिये कि मैं अपने स्वभाव को पवित्र आत्मा की अधीनता में ला सकूँ। मुझे अपमान को अनदेखा करने की क्षमता दीजिये, क्योंकि यह मुझे तब तक नहीं बदलेगा कि मैं कौन हूँ, जब तक कि मैं नकारात्मक प्रतिक्रिया न करूँ। बल्कि प्रभु मुझे अनुग्रह दीजिये कि जब कोई कठोरता से बात करे, तब भी मैं कोमलता से प्रतिक्रिया करूँ। मुझे झुकने और जाने देने के लिए

अनुग्रह दीजिये, क्योंकि चीजों को पकड़कर रखने की मेरी जिद्द से कलह उत्पन्न होता है। जब मेरे जीवन से कहल दूर हो जाएगा तो आशीषें आएंगी। परमेश्वर! मेरे जीवन में परिवर्तन लाइये ताकि मैं ऐसा जीवन जी सकूँ जो पूरी तरह से कलह-मुक्त हो।"

हम में से कुछ लोगों की स्मृति बहुत अच्छी होती है जो लोगों की गलतियों का हिसाब रखती है। परमेश्वर से कहिये,

"प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरी स्मृति को स्वच्छ कर दीजिये और अन्य लोगों द्वारा किये गए बुरे कामों को जाने देने में मेरी मदद कीजिये।"

पति और पत्नी! हर विवाह में कलह और वाद-विवाद के हमेशा अवसर होते हैं। हमें हर दिन के अंत में कहना होगा कि हम पति-पत्नी की स्लेट को साफ-सुथरा रखेंगे और गलतियों का लेखा नहीं रखेंगे। प्रार्थना कीजिये,

"परमेश्वर, हम में कार्य कीजिये और हमारे हृदयों में परिवर्तन लाइये।"

पश्चाताप और प्रार्थना के परिणामस्वरूप, लंबे समय से टूटे हुए संबंधों में चंगाई और सुधार होगा। हमारे हृदयों में ही नहीं बल्कि हमारे जीवन के सभी संबंधों में शांति, सद्भाव और अच्छी समझ होगी। परमेश्वर ने जो कार्य किया है, वह सभी टूटे हुए संबंधों को प्रभावित करे और पुनर्गठित करे तथा उनमें शांति और आनंद लाए, क्योंकि परमेश्वर ने हमारे हृदयों को बदल दिया है!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" **(रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा " **(रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का

दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें**: apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
सम्बंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य सम्बंधित मुद्दे
परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक
आत्मिक समस्याएं
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
जिंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

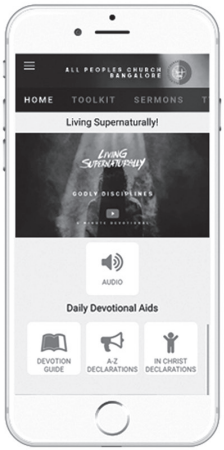

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

कलह सभी जगह होते हैं—परिवार में, कार्यस्थल में, सेवकाई में, कलीसिया में, इत्यादि. और यह मानवीय संबंधों को नष्ट कर देते है। जीवन का शायद ही ऐसा कोई पहलू बचा होगा जो इस कैंसर से अछूता हो। अतः यह कलह है क्या? एक व्यक्ति के रूप में हमें अपने जीवनों से कलह को दूर रखने के लिए बुलाया गया है!

तो, यह कलह क्या है? यह लोगों के बीच विभाजन, झगड़ा, घृणा,दुर्भावना, विवाद, शत्रुता, या गुटबाजी है।

इस पुस्तक का उद्देश्य है – कलह के कारणों को समझना, अपने जीवन में कलह के नकारात्मक प्रभावों को समझना और यह सीखना कि अपने जीवन से कलह को कैसे दूर रखा जाए।

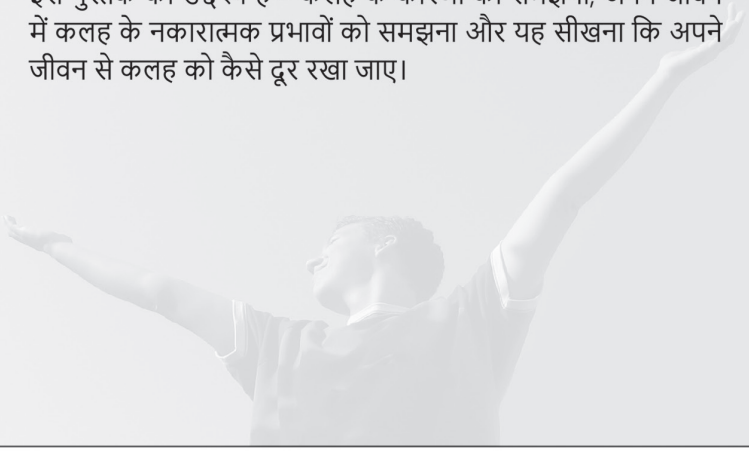

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org